International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नवजागरण का सामाजिक प्रभाव

कुसुम कुमारी (नेट)
इतिहास विभाग
सिदो–कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय
दुमका

उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दू धर्म एवं समाज में अनेक कुरीतियां एवं कुप्रथाएं व्याप्त थी । लोगों का धा र्मक तथा सामाजिक जीवन कुत्सित हो गया था और कु रीतियों के दलदल में फंस गया था । सतीप्रथा, बाल- ववाह, बहू- ववाह, जात-पात की संकीर्णता, अस्पृश्यता, जाति-प्रथा के बंधन की कठोरता आदि कुप्रथाओं के कारण ऐसा प्रतीत हो रहा था क हिंदू धर्म शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा । घर में रू ढि एवं परम्परा के कठोर बन्धनो में जकड़ गया था और उसमें उच्च दार्शनिक एवं धा र्मक सद्धां न्तों का नितान्त अभाव था। धर्म के संचालकों को भी धर्म के वास्त वक स्वरूप का ज्ञान नहीं था । धर्म की रक्षा के लए इन कुप्रथाओं का अन्त करना आवश्यक था । पुनर्जागरण के फलस्वरुप समाज -सुधारकों का ध्यान इन कुप्रथाओं की ओर आकृष्ट हुआ और वे इन बुराइयों को दूर करने का आंदोलन चलाने लगे ।

उन्नीसवीं सदी के धा र्मक आंदोलन केवल धर्म-सुधार तक ही सी मत नहीं थे । समाज सुधार इन आन्दोलनों का मुख्य लक्ष्य था । भारतीय समाज और मुख्यतः हिंदू समाज में अनेक सामाजिक कुरीतियों का समर्थन धर्म के आधार पर कया जाता था जिसके कारण साधारण व्यक्ति इन कुरीतियों को तोड़ने का साहस नहीं कर पाते थे । इन धर्मसुधारकों ने यहां बताया क इन सामाजिक कुरीतियों का स्थान हमारे धर्म में तो क्या समाज में भी ना था। यह कुरीतियाँ मुख्यत: राजनीतिक परिस्थितियों या अन्ध वश्वासों से उत्पन्न हुई थी । अतएव इन सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना धर्म का वरोध करना नहीं है , बल्कि, इसके वपरीत अपने धर्म और समाज को शक्तिशाली बनाना है । ब्रह्म समाज में स्त्रियों को समान अ धकार दिया गया और उसमें जाति -प्रथा का कोई स्थान नहीं रहा । आर्यसमाज में स्त्री गुरुकुलो की स्थापना की और शु द्ध आन्दोलन को आरंभ करके ना केवल जाति समानता पर ही बल दिया बल्कि ईसाई और इस्लाम धर्म के मतावलम्बियों के लए भी हिंदू धर्म और समाज के द्वार खोल दिए स्वामी ववेकानंद ने सभी मनुष्य को ईश्वर का स्वरूप बनाकर ना केवल जाति प्रथा की जड़ का पर प्रहार कया बल्कि स्त्री और पुरुषों को समान पद प्रदान कया आधुनिक समय में सभी राजनीतिक और सामाजिक नेताओं ने समाज सुधार के कार्य को जो महत्व प्रदान कया है उसका मूल कारण उन्नीसवीं सदी के यह धा र्मक और सामाजिक आंदोलन ही थे अब सती -प्रथा और बाल - ववाह से हमारा समाज कार्य मुक्त है वधवा ववाह और अंतर जाति ववाह संभव है पर्दा-प्रथा कार्य समाप्त है वदेश यात्रा साधारण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बात समझी जाती है तथा स्त्री शक्षा और शहर शक्षा हमारी शक्षा के अंग बन चुके हैं इस प्रकार हिंदू समाज के अनेक प्रति क्रयावादी तत्व में समाप्त कर दिए गए हैं । ब्रह्म समाज बोलता है एक सुधारवादी संस्था थी उसने हिंदू समाज में व्याप्त समस्त बुराइयों व कुरीतियों पर खुलकर कुठारघात कया । सती प्रथा, बाल ववाह, कन्या-वध, बहू- ववाह, पर्दा प्रथा जाति प्रथा, मद्यपान व अस्पृश्यता ऐसी कुरुख कथाएं थी जो हमारे देश में शक्ति रस को निरंतर चूसकर उसे खोखला कर रही थी । ब्रह्म समाज के निरंतर प्रयास के कारण कालांतर में सती प्रथा के वरुद्ध कानून बनाया गया और भारतीय सं वधान के अंतर्गत कई कुरीतियों को अवैध घो षत कया गया जिसमें जाति -प्रथा, बाल ववाह , बाल -हत्या आदि वशेष रूप से उल्लेखनीय है । जब मैं समाज के प्रयासों के फलस्वरूप वधवा ववाह और अंतरजातीय ववाह को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ तथा जाति प्रथा की कठोरता भी धीरे-धीरे कम होने लगी आधुनिक भारतीय सरकार के द्वारा उठाए गए अनेकानेक महत्वपूर्ण कदमों के बाद भी जाति प्रथा को समूल नष्ट नहीं कया जा सका और यह समाज भी कसी ना कसी रूप में वद्यमान है, फर भी इस दिशा में ब्रह्म समाज के प्रयासों को नकारा नहीं जा सकता ।

सामाजिक सुधार स्वामी दयानंद सरस्वती को ना तो अंग्रेजी भाषा का ज्ञान था और ना ही पर पश्चिमी सभ्यता का कोई प्रभाव था । अतः वह हिंदुत्व के प्रतीक थे इसी कारण वे भारतीय समाज को सुधारने के इच्छुक थे । वे जाति-पाति के प्रबल वरोधी थे क्यों क वेदों में इसका कोई उल्लेख नहीं है और जिस चतुर वर्ण व्यवस्था का उल्लेख है वह भी कर्म पर आधारित थी । ब्राह्मणों की सर्वोच्चता के प्रबल वरोधी थे । अछूतों को भी वह समान अ धकार दिलाना चाहते थे । साथ ही स्त्री- शक्षा और पुरुषों से उनकी समानता के थे समर्थक थे परंतु सह शक्षा उन्हें स्वीकार नहीं थी । उन्होंने बहु- ववाह और बाल ववाह और पर्दा -प्रथा का डटकर वरोध कया । कुछ वशेष दशाओं में उन्होंने वधवा - ववाह का समर्थन कया था

शु द्ध प्रथा के द्वारा उन्होंने अनेक धर्म परिवर्तित हिंदुओं को पुनः हिंदू धर्म में दी क्षत कया । यद्य प इस प्रथा के कारण आर्य समाज का पर्याप्त वरोध हुआ परंतु स्वामी दयानंद ने उसकी कोई चंता नहीं की । उन्होंने पहली बार खुलकर ईसाई मत और इस्लाम पर प्रहार कए और भारतवा सयों में साहस का संचार कया ता क हिंदुत्व का वृक्ष हम सदैव पनपते रहे ।

स्वामी ववेकानंद का धर्म केवल मंदिर की चारदीवारी तक सी मत नहीं था अ पतु जन-जन के हित में नहीं था । वे मानव सेवा को वशेष महत्व प्रदान करते थे। यह भारतवर्ष में व्याप्त है शक्षा और दरिद्रता को समाप्त करने के अत्यंत इच्छुक थे। सामाजिक क्षेत्र में सुधार हेतु थी थयोसो फकल सोसाइटी में कुछ महत्वपूर्ण कार्य क ये। समाज में हिंदू समाज में प्रच लत बाल- ववाह, वधवा ववाह , कन्या -वर वक्रय और छुआछूत आदि पर कुठारघात करते हुए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

समाज सुधार के अनेक महत्वपूर्ण कार्य क ये। अपने इन उपलब्धियों के कारण ही थयोसो फकल सोसाइटी को भारतवर्ष के श क्षत वर्ग में अ धक सम्मान प्राप्त हुआ।

थयोसो फकल सोसायटी प्रमुख उद्देश्य निम्न थे

1. समस्त धर्मों की मूलभूत एकता
2. जीवन का महत्व और वश्व बंधुत्व का प्रचार
3. बहय आडंबर का वरोध
4. प्राचीन रूढ़ियो यो रीति-रिवाजों परंपराओं वश्वासों और कर्मकांड का प्रबल वैज्ञानिक समर्थन कर प्राचीन आदर्शों और परंपराओं को तो पुनर्जी वत कया ।

यह संस्था सामाजिक धा र्मक को राष्ट्रीय निर्माण कार्यों के लए महत्वपूर्ण अंग रही आजकल इस सोसाइटी की कुछ शाखाएं केवल द क्षण भारत में शेष है जो धर्म और सुधार कार्यों में लगी हुई है परंतु उत्तर भारत में इसका प्रचार नगण्य है ।

वास्तव में इन सामाजिक एवं सुधार आंदोलनों के कारण हिंदू समाज एवं धर्म में व्याप्त बुराइयों का अंत हो गया और देश में आधुनिकीकरण और नवजागरण का सूत्रपात हुआ। जिसके फलस्वरूप समाज सुधार के कई महत्वपूर्ण कार्य कए गए । इनमें से कुछ सुधार कार्यों का सं क्षप्त वर्णन वर्णन अग्र ल खत है।

<u>शशु हत्या का अंत</u>:- सर्वप्रथम महत्वपूर्ण सामाजिक सुधार जो ईस्ट इं डया कंपनी ने कया वह शशु हत्या का अंत करना था शशुओं की यह मानुषी का हत्या शष्यों को गंगा के मुहाने पर समुद्र में फैंक कर या कन्याओं को उ चत पौष्टिक भोजन से वं चत कर या माता के स्तनों को वश युक्त करके की जाती थी । यह हत्या सन 1795 के मंगल रेगुलेशन 21 और सन 18 सो 5 के रेगुलेशन छह से जिसे देख कर दी गयी ।

<u>सती प्रथा का अंत</u> भारत में द् वतीय महत्वपूर्ण सुधार सती -प्रथा का अंत था जो राजा राममोहन राय के निरंतर प्रयासों से सफल हुआ । उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का नाश करने के लए सरकार का हाथ बताया और सती प्रथा के वरुद्ध स क्रय प्रचार कया व्यवहारिक वरोध के फलस्वरुप लॉर्ड व लयम बेंटिक ने सन 1829 में सती-प्रथा और गैर-कानूनी घो षत कर दी।

<u>बहु ववाह और बाल ववाह का अंत</u> : आधुनिक युग में राजा राममोहन राय प्रथम भारतीय थे जिन्होंने बहु ववाह के वरुद्ध आवाज बुलंद की और उनके इस कार्य को उनके पश्चात अन्य अनेक उत्साही कार्यकर्ताओं ने जारी रखा । सन 1872 के नेटिव मैरिज एक्ट

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

द्वारा जो केशवचंद्र सेन के प्रयत्नों से स्वीकृत हुआ था , बाल- ववाह का उन्मूलन कर दिया गया,

बहू- ववाह को दण्डनीय अपराध घो षत कर दिया गया , वधवा- ववाह तथा अन्तजर्रातीय ववाह उन लोगों के लए स्वीकृत कर दिए गए जो इस कानून के अधीन होना चाहते थे। आर्य- समाज ने भी बाल ववाह का अन्त करने के लए कठिन प्रयत्न कया और आधुनिक युग के सबसे बड़े पारसी सुधारक बी॰ एस॰ मालाबारी ने भी बाल - ववाह के वरोध में सन 1884 में स क्रय आंदोलन आरंभ कया। फलस्वरूप, सन 1891 में एज आफ कनसेन्ट' कानून स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार घोर वरोध होने पर भी ववाह की आयु 10 वर्ष से 12 वर्ष कर दी गई। सन 1901में बड़ौदा राज्य की सरकार ने 'इनफ़ेन्ट मैरेज प्रीभेन्सन एक्ट' द्वारा ववाह के लए कन्या की आयु 12 वर्ष और लड़कों की आय 16 वर्ष कर दी। सन 1930 में व्यवस्था पका सभा और राज्य-सभा ने अजमेर में हर वलास शारदा द्वारा प्रस्ता वत चाइल्ड मैरिज रेस्ट्रेंट बिल को स्वीकृत कर दिया इसके अनुसार 18 वर्ष से कम आयु के लड़के और 14 वर्ष से कम आयु की लड़की का ववाह दण्डनीय अपराध घो षत कर दिया । परंतु यह ध्यान देने योग्य है क वर्तमान आ र्थक परिस्थितियों और शक्षा ने बिना कसी प्रयास के ही लड़के और लड़ कयों को वैवाहिक आयु सुधारकों और कानून -निर्माताओं की आशा से भी अ धक बढ़ा दी है। सामाजिक परंपरा के अनुसार व भन्न बाहनों की आड़ में हिंदू पति अपनी पत्नी के जी वत रहने पर भी अन्य ववाह कर सकते थे और अनेक ने कए भी परंतु शक्षा प्रचार व प प्रगति के साथ साथ सामाजिक-दृष्टिकोण बदल गया और इस प्रथा का प्राय: अंत हो चुका है।

<u>वधवा ववाह आंदोलन</u> -: 18वीं शताब्दी के मध्य में हिंदू समाज में वधवा - ववाह को प्रच लत करने के लए प्रयास कया गया , पर वह असफल रहा । पं डत ईश्वरचंद्र वघासागर 1802- 9891 ने वधवा ववाह के लए तीव्र आंदोलन कया और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत सरकार के पास एक नवेदन पत्र भी भेजा । उनके भारतीय प्रयत्यनों के परिणामस्वरूप सन 1856 में एक कानून बना जिसके अनुसार वधवा - ववाह को कानूनी मानकर ववा हित गीत वधवाओं की संतान की वैधता घो षत कर दी गई। ब्रह्म-समाज और आर्य-समाज ने वधवा- ववाह को लोक प्रय बनाने हेतु दिव्य प्रयास कए । सभी प्रान्तों में वधवा - ववाह आंदोलन के समर्थक होने लगे सन 1861 में स्था पत मुंबई की वधवा -भवन संस्था अहमदाबाद में में भी प्रारंभ की गई । वधवा -पुन र्ववाह संस्थान , मैसूर की महारानी स्कूल , पंजाब में प वत्र संस्था, और लखनऊ की हिंदू- ववाह सुधा लीग, सभी ने वधवाओं की दयनीय दशा को सुधारने के लए प्रशंसनीय कार्य कए । अनेक प्रगतिशील उदार और दानशील

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

व्यक्तियों ने वधवाओं के लए आश्रमों की व्यवस्था की एवं उनके शक्षा आदि का प्रबंध भी कया। शक्षा लयों, अस्पतालो तथा अन्य संस्थाओं में श क्षत वधवाओ को नौकरियां देकर उनके वेघव्य जीवन की जटिलता, नीरसता और यातनाओ को कम कया गया। समय समय- पर श क्षत वर्गने उनकी वभाग भी कराएं और वधवा - ववाह को सामाजिक दृष्टि से निष्कलंक बता कर प्रोत्साहित कया गया।

<u>स्त्री शक्षा की प्रगति</u> -: प्राचीन भारत में स्त्री शक्षा का प्रचार खूब था। मध्यकालीन भारत में यत्र - तत्र इसका अस्तित्व व घमान था पर मुगल - साम्राज्य के पतन के बाद से ही

स्त्री - शक्षा को कसी प्रकार का प्रसाद प्राप्त नहीं हुआ। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में फर इस परंपरा की जागृति हुई और स्त्री- शक्षा को नवीन प्रेरणा मली। सन 1857 के सपाही- वद्रोह के पूर्व हिंदू कन्याओं के लए स्कूल स्था पत कए गए और ईसाई धर्म -प्रचारकों ने ईसाई धर्म को ग्रहण करने वाले व्यक्तियों की पुत्रियों के लए पाठशा लाएँ खोली। मई 18**49** ईसवी में सर्वप्रथम कोलकाता में हिंदू बा लका वद्यालय नाम से एक बा लका वद्यालय की स्थापना हुई लॉर्ड डलहौजी ने इस बा लका व घालय के लए रुपयों का अनुदान दिया। सन 1857 तक लगभग 100 राजकीय महिला वघालय की स्थापना हो गायी। सपाही - वद्रोह के बाद सरकार तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं, जैसे ब्रह्म - समाज, आर्य - समाज, थयोसो फकल सोसाईटी सर्वेंट ऑफ़ इं डया सोसाइटी से स्त्री - शक्षा को खूब प्रोत्साहन मला। डक्कन शक्षा- स मति ने भी

स्त्री- शक्षा की समस्या को हल करने के लए महत्व पूर्ण सहायता प्रदान की। सन् 19**07** में इं डयन वमेन एसो सएशन की स्थापना के बाद से स्त्री- शक्षा की ओर अ धक ध्यान नहीं दिया गया, अ पतु उनकी साधारण दशा सुधारने के प्रयत्न भी कए गए। सन 1909 में पूना में श्रीमती रानाडे द्वारा स्था पत पूना सेवा सदन , सन 1908 में मालाबारी द्वारा स्था पत सेवासदन सोसाइटी और सन 1914 में वमेंस मे डकल स र्वस ने नर्स और मडवाइफ के प्र शक्षण के लए शशु - स्वास्थ्य- रक्षा तथा मातृत्व की प प्रगति हेतु और वधवाओं को नौकरी दिलाने के लए प्रशंसनीय कार्य कए । सन 1916 में दिल्ली में स्था पत लेडी हा र्डंग मे डकल कॉलेज स्त्रियों को एम ॰बी॰बी॰एस॰ की शक्षा दे रहा है और भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी का मेटर नीटी एंड चाइल्ड वेलफेयर ब्यूरो ही महिलाओं को लाभप्रद सेवा ओ की शक्षा दे रहा है । इसके अतिरिक्त स्त्रियों के लए अनेक व घालय और महा वद्यालय खोले गए और इस दिशा में प्रतिदिन प्रगति होती जा रही है । निम्न वर्गों में स्त्रियों की उन्नति की ओर ध्यान दिया जा रहा है। यदि एक और निर्धन पुरुषों की भाति उसी वर्ग की स्त्रियां अपने जी वकोपार्जन हेतु मलो मैं मजदूरी , संस्थाओं में कार्य और खेती में संलग्न है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तो दूसरी ओर से श क्षत स्त्रीयां वघालयों, शशुग्रहो, आश्रमो और अस्पतालों का संचालन कर रही है।

प्रांतीय तथा अ खल भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रवेश कर रही है, सरकारी और गैर-सरकारी पदों के लए चुनी जाने लगी है, और देश वदेश में भारत सरकार के राजनीतिक-हितों का प्रतिनि धत्व कर रही है सन1947 के बाद स्त्रीयां न्याय - वशेषज्ञ मंत्री और राजदूत भी होने लगी । भारत के नवीन कानूनों और सं वधान द्वारा स्त्रियों को संपत्ति का उत्तरा धकारी बना कर उनको आ र्थक स्वतंत्रता दी गई और समान अ धकार देकर समस्त लंग -भेदो को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार, साहित्य, शासन और स्वदेश रक्षा के क्षेत्र स्त्रियों के लए समान रूप से खोल दिए गये।

<u>महिला मता धकार आंदोलन</u> -: सन 1917 के पश्चात इस आंदोलन को अपूर्व सफलता मली और स्त्री आनेक को सलों, संस्थाओं, कारपोरेशनो ओर म्युनि सपे लटियों में सदस्य होने लगी। कटिपय ने भारतीय कांग्रेस में भाग लया । उनसे संबं धत मता धकार की योग्यताएं उदार कर दी गई और उन्हें मत देने का अ धकार दिया गया। सन 1935 के भारत सरकार के एक्ट ने स्त्रियों को केंद्रीय तथा प्रांतीय धारासभा में स्थान दि ये। भारत के नवीन सं वधान में प्रत्येक बा लग स्त्री को मता धकार दिया गया है।

<u>पर्दा प्रथा का अंत</u> -: स्त्री शक्षा से संबं धत ही पर्दा प्रथा का उन्मूलन है । श क्षत हिंदू महिलाओं ने ही नहीं अ पतु श क्षत मुसलमान महिलाओं ने भी पर्दा -प्रथा का बहिष्कार कया है। य घ प द क्षण भारत में इस प्रथा का अस्तित्व ही नहीं था , तथा प संपूर्ण देश में सामान्य जागृति, शक्षा आदि के प्रभाव से इस प्रथा का अंत हो रहा है

<u>दास प्रथा का अंत</u> -: समाज में दासत्व एवं एक भयंकर अ भशाप रहा । सन1811 में ईस्ट इं डया कंपनी की सरकार ने भारत के दासों के आयात पर रोक लगा दी और सन 1832 में दातो को एक जिले से दूसरे जिले में क्रय वक्रय अपराध-मान दिया गया। ईस्ट इं डया कंपनी नेशन 1833 के आज्ञापत्र द्वारा भारत के दासता का अंत कर दिया गया और सन 1834 के कानून के अनुसार यह गैर-कानूनी घो षत कर दिया गया और भारतीय दंड - वधान के अनुसार दास-व्यापार एक दंडनीय अपराध घो षत कर दिया गया।

<u>द लत वर्ग की उन्नति</u> :--आधुनिक युग वर्ग -व्यवस्था के सबसे अ धक वकृत स्वरूप अछूतों की समस्याओं में व्यक्त हुआ । अछूत हिंदू समाज के अंग होते हुए भी उसे बहिष्कृत माने जाने लगे । मंदिरों, सार्वजनिक स्थानों , कुओ उत्स वो, वद्यालयों आदि के उपयोग से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उन्हें वं चत कर दिया गया। द क्षण -भारत में सवर्ण हिंन्दू अछूतों की छाया - मात्र से इस पर से ही अपने को अप वत्र मानने लगे। वे राजनीतिक नौकरियों, अ धकारों व मतों से वं चत कर दिए गऐ। दरिद्रता व अ शक्षा ने उनके नैतिक स्तर पर अत्य धक गरा दिया। सामाजिक, आ र्थक, धा र्मक और राजनीतिक नियंत्रणो ,अयोग्यताओ व सु वधाओं के बोझ से वे कराहने लगे। अस्पृश्यता का कलंक हिंदू समाज का उपहास करने लगा।

नवजागरण के फलस्वरुप द लत जातियों ने भी नवीन चेतना का प्रादुर्भाव हुआ । उनकी दशा सुधारने के लए इसाई धर्म प्रचारकों इसाई संस्थाओं थयोसॉ फकल सोसायटी , रामकृष्ण मशन और वशेषकर आर्य - समाज ने अथक प्रयत्न कऐ। यदि इसाई धर्म - प्रचारकों ने अनेक को अछूतो इसाई बना लया तो आर्य-समाज ने शु द्ध द्वारा उनमें से अनेक को पुन : हिंदू समाज में ले लया । सन 1916 में मुंबई में स्था पत द लत -वर्ग मशन समाज, गांधीजी के हरिजन आंदोलन , हरिजन सेवक संघ , 'हरिजन' पत्र व श्री गोखले के अनेक कानूनों ने द लत वर्ग की उन्नति में अमूल्य योगदान दिया । उन्होंने उनकी शक्षा को प्रोत्साहित कया, उनको काम दिलाया , धंधों में लगाया , उनकी सामाजिक अयोग्यताओं का निवारण कया, उधर धा र्मक सद्धांतों की उन्हें शक्षा दी , चरित्र द्वारा व्यक्तित्व - निर्माण और स्वस्थ नागरिकता का उपदेश दिया। स्वयं हरिजन भी अपने मानवीय अ धकारों के लए आंदोलन करने लगे। इन सब का परिणाम यह हुआ क धीरे धीरे अछूतों की दशा अपेक्षाकृत- सुधरने लगी। अनेक मंदिर तथा सार्वजनिक स्थान हरिजनों के लए खोल दिए गए , उनके लए शक्षा का भी समु चत प्रबंध कर दिया गया , सरकारी नौकरियों में प्रवेश करने के लए उन्हें उसे वशेष सु वधाएं दी गई और भारत के नए वधान में उन्हें सभी प्रकार के अ धकार देकर भारत से अस्पृश्यता को सदैव के लए वनष्ट करने का प्रयास कया गया। परंतु द लत -वर्गों की आ र्थक दशा आज भी संतोषप्रद नहीं है।

<u>जाति प्रथा की श थलता</u> -: आधुनिक युग में और वशेषकर बीसवीं शताब्दी में जाति जाति -प्रथा की जटिलता बहुत कुछ ढीली हो गई और उनके नियंत्रणों में स्थिरता आ गई। पहले खान-पान और ववाह वशयक जातिय के बंधनों से जकड़ा हुआ हिंदू अपना पै तृक पैशा नहीं छोड़ सकता था और वदे शयों के संपर्क से दू षत होने के भय से जल पोत द्वारा वदेशी यात्रा भी नहीं कर सकता था । श क्षत -वर्ग ने क्रमशः इन नियमों की अपेक्षा करना प्रारंभ कया। सर्वप्रथम, खान-पान और समुद्र यात्रा के बंधन तोड़े गए । रेल व मोटरो में प्रवास की आवश्यकताओ, आधुनिक ओष धयो के सेवन , होटलों के खान -पान आधुनिक शक्षा व पाश्चात्य वचारों के जातियो व छुआछूत और खान पान के बंधनों को- श थल कर दिया। समूचे देश में एक कानून लागू होने तथा समानता के सद्धांत का पालन होने से प्राचीन

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जाति- भेद समाप्त हो गया और कानून द्वारा अनेक प्रांतों में जाति -बहिष्कार दंडनीय अपराध बना दिया गया। देश के सभी भागों में व भन्न जातियों में पारस्परिक खान-पान और अंतरजातीय ववाह को खूब प्रोत्साहन मलता रहा । आ र्थक परिस्थितियों के प्र हार से ववश होकर अनेक लोग पे तृक धंधों को छोड़कर व भन्न प्रकार के व्यवसायों को स्वतंत्रतापूर्वक करने लगे हैं । यद्य प वर्ण -व्यवस्था के प्रतिबंध अपेक्षाकृत श थल हो गए हैं , पर उनका अस्तित्व कसी ना कसी रूप में आज भी वद्यमान है।

संयुक्त परिवारप्रथा- परिवर्तित दशा में संयुक्त परिवार की व्यवस्था भी बदल ग यी। कुटुंब के व भन्न लोगों को नौकरी , वा णज्य उद्योग और स्था नाभाव के कारण एक ही परिवार के लोगों को भन्न भन्न स्थानों पर र-हना पड़ा परिवार के सदस्यों की आ य वह धंधे में अंतर होने के कारण परिवार में प्रच लत उदारता , स्नेह , सहयोग व सहायता का अंत हो गया। स्वतंत्रता समानता और व्यक्तिवाद क पाश्चात्य वचार श्रंखलाओ - के कारण संयुक्त परिवार-व्यवस्था को भारी आघात लगा और भारत में या द्रुत गति लुप्त होती जा रही है।

संदर्भ सूची

.1अर वन्द देव, भारतीय समाज एवं जनजागरण, देव प्रकाशन, दिल्ली,2007 , पृ132.

.2गोपाल घोष, इं डयन ट्रेड यूनियन मूवमेंट , रत्ना पब्लिकेशन , कलकत्ता,1961 , पृ। -171 172

.3भूपेंद्र दत्ता, भारतेर द् वतीय स्व धनता संग्राम , पूर्वादृत, पृ56-55 .

.4आर॰सी॰ मजूमदार, हिस्ट्री ऑफ दि फ्रीडम मूवमेंट इन इं डया गुरुमंडल ग्रंथमाला, कलकत्ता, 1963,पृ205-204.

.5वही

सुसोभन सरकार 6, बंगाल नवजागरण, ग्रंथ शल्पी, कलकत्ता,185-182.पृ 1997

.7वही

.8इंदुलाल याश्रीम एवं श्यामजी वर्मा कृष्ण ,लाइफ एंड टाइम्स ऑफ एन इं डयन रिवोलुशनरीनरी, अनुसंधन, प्रकाशन, बंबई , 1950 ,152-150

.9हरिदास मुखर्जी एवं उमा व पन चन्द्र पाल एंड इं डयन स्ट्रगल फॉर स्वराज मॉडर्न पुब्लिकेशन, कलकत्ता,पृ34-31.